



वृद्धों में स्वास्थ्य समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रागिनी कुमारी, शोधार्थी
डॉ ईशा सिन्हा, पर्यवेक्षिका
विभागाध्यक्ष, गृहविज्ञान विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोध सारांश :-

वृद्धावस्था मानवीय जीवन का संध्या काल होता है। यह एक ऐसी अवस्था होती है जिससे जन्म लेने वाले प्रत्येक प्राणी को गुजरना पड़ता है। यह जीवन की सर्वसत्य अवधारणा है।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य वृद्धों में स्वास्थ्य समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। शोध उद्देश्य की पूर्ति के लिए समस्तीपुर जिला (शहरी एवं ग्रामीण दोनों) क्षेत्र से कुल 150 वृद्धों का चयन उद्देश्यात्मक चयन पद्धति के आधार पर किया गया था। चयनित किये गये उत्तरदाताओं की उम्र सीमा 62 वर्ष से लेकर 70 वर्ष (औसत उम्र 66 वर्ष) थी। शोधार्थी द्वारा स्वयं विकसित वृद्धावस्था से संबंधित समस्याओं से संबंधित साक्षात्कार अनुसूची एवं व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र के माध्यम से सूचनाएँ एकत्रित की गईं। एकत्रित की गई सूचनाओं के विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि वृद्धावस्था में मधुमेह, हृदय रोग, विस्मरण, निम्न स्तरीय दृष्टि क्षमता, सामान्य कमजोरी, अस्थि दुर्बलता एवं दर्द, समायोजन इत्यादि संबंधी समस्याएँ होती हैं जो वृद्धों के स्वास्थ्य स्तर को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

शब्द कुंजी : वृद्धों, स्वास्थ्य, समस्या-विश्लेषणात्मक अध्ययन

परिचय :-

मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में वृद्धावस्था एक ऐसी अवस्था होती है, जो जीवन प्रत्याशा के करीब एवं उसके आगे की अवस्था को सूचित करती है। वृद्धावस्था को सार्वभौमिक रूप से हम परिभाषित नहीं कर सकते हैं, क्योंकि यह मुद्दा एक संवेदनशील मुद्दा है। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र की विचारधारा है कि 60 वर्ष या इससे अधिक उम्र की अवस्था को वृद्धावस्था कहा जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के क्षेत्रीय कार्यालय अफ्रीका के 2001 के प्रतिवेदन में अफ्रीका में 50 वर्ष की अवस्था को वृद्धावस्था की शुरुआत माना है। इसी तरह वृद्धावस्था से संबंधित विशेषज्ञों का मानना है कि 60 से 70 उम्र सीमा में वृद्धावस्था की शुरुआत होती है। इस तरह वृद्धावस्था के संदर्भ में अलग-अलग अवधारणाओं के आधार पर समेकित रूप से कहा सकता है कि 65 वर्ष की आयु से प्रारंभ होती है।

अनेक अध्ययनों एवं शोध कार्य के आधार पर संदर्भित किया गया है कि वृद्धावस्था में कुछ विशिष्ट प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक लक्षण विकसित होते हैं। ये लक्षण सामान्य रूप से समस्याजनक होते हैं। अर्थात् वृद्धावस्था का लक्षण समस्याजनक होता है। मुख्य शारीरिक लक्षणों में हड्डी एवं जोड़ों की समस्याएँ, उच्च रक्त चाप, अस्थि दुर्बलता, हृदय रोग इत्यादि होते हैं। अन्य शारीरिक समस्याओं में श्वसन समस्या, दंत समस्या, पाचन तंत्र की समस्या, निम्न दृष्टि आधारित समस्या, शरीर कंपन की समस्या, सुनने की क्षमता में कमी, प्रतिरक्षण हास, गतिशीलता में कमी, यौन इच्छा में कमी, त्वचा संबंधी विकृति इत्यादि मुख्य समस्याएँ होती हैं।

मानसिक स्तर पर स्मृति लोप, उदासी मनोदशा, समायोजन समस्या, संज्ञानात्मक विकृति, आक्रामकता, अवसाद इत्यादि विकृति एवं समस्याएँ होती हैं।

वृद्धावस्था में समस्याओं की जटिलता होने के कारण शोध की मानकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में मधुमेह, हृदयरोग, श्वसन समस्या, निम्नदृष्टि क्षमता, अस्थि दुर्बलता, विस्मरण, समायोजन एवं समस्या के अध्ययन को लक्षित किया गया है।

* पूर्व के अध्ययनों की समीक्षाएँ :-

इस शोध में सही दिशा में एवं मानक स्तर पर शोध कार्य करने हेतु कुछ पूर्व के अध्ययनों का अवलोकन भी किया गया है। कौर एवं सिंह ने 2021 में वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित समस्याओं का अध्ययन किया है और परिणाम के रूप में बताया है कि भारतीय परिवेश में प्राकृतिक वातावरण के बावजूद अधिकांश वरिष्ठ नागरिक अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होते हैं।

मिश्रा (2007) ने अपने अध्ययन के आधार पर परामर्शित किया है कि पारिवारिक देखरेख में कमी एवं वित्तीय समस्या के कारण अधिकांश वृद्ध वृद्धाश्रमों में आश्रम लेने लगे हैं। इनमें उन्होंने विधवाओं की संख्या अधिक पाई है।

वैष्णव इत्यादि (2022) ने वृद्धों के लिए स्वास्थ्य देखभाल आधारित राष्ट्रीय कार्यक्रम का अध्ययन किया है और परिणाम में पाया है कि सरकारी एवं गैर सरकारी अभिकरणों वृद्धों के स्वास्थ्य हेतु अनेक कल्याणकारी कार्य कर रहे ह, जिससे वृद्ध समुदाय अपने घर पर ही आवश्यक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

शर्मा एवं अग्रवाल (2020) ने अपने अध्ययन के माध्यम से परामर्शित किया है कि भारत में कोविड-19 महामारी के कुशल प्रबंधन में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना ने कुशलता पूर्वक भूमिका निभाई है।

एक अन्य अध्ययन में गोस्वामी इत्यादि ने 2017 में परामर्शित किया है कि ग्रामीण महाराष्ट्र में वृद्ध जनसंख्या में निराशा एक मुख्य समस्या के रूप में व्याप्त है, जो वृद्ध समुदाय को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

इस तरह उपरोक्त पूर्व के विभिन्न अध्ययनों की समीक्षा के आधार पर मैंने “वृद्धों में स्वास्थ्य समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन” नामक शीर्षक से संबंधित शोध कार्य करने का निर्णय किया है।

* शोध का उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य वृद्धों में स्वास्थ्य समस्या का विशलेषणात्मक अध्ययन करना था।

* शोध की परिकल्पना :-

वर्तमान शोध में वृद्धों में समस्याओं का अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित था कि वृद्धों में अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याएँ होती हैं, जो उनमें स्वास्थ्य आधारित कठिनाई उत्पन्न करती है।

* प्रविधि :-

(i) उत्तरदाता :

इस शोध में समस्तीपुर जिला क्षेत्र से कुल 150 वृद्ध व्यक्तियों का चयन उद्देश्यात्मक चयन पद्धति के आधार पर किया गया। उत्तरदाताओं की उम्र सीमा 62 वर्ष से लेकर 70 (औसत उम्र 66) वर्ष थी।

(ii) मापनियां :

उत्तरदाताओं से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी हेतु स्वयं शोधार्थी द्वारा विकसित प्रश्नावली अनुसूची एवं व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली अनुसूची में स्वास्थ्य समस्याओं से संबंधित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया था एवं व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र में उत्तरदाताओं के संबंध में व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जानकारी हेतु संगत एकांशों को सम्मिलित किया गया था।

* प्रदत्त संगत की प्रक्रिया :-

(i) उत्तरदाताओं से शोध शीर्षक से संबंधित संगत जानकारी हेतु तैयार की गई मापनियों के साथ लक्षित उत्तरदाताओं से संपर्क किया गया। उसके बाद शोधार्थी द्वारा उनसे मिलने का प्रयोजन बताया गया और उनके साथ आत्मीयता का संबंध बनाया गया। तत्पश्चात्

निर्धारित तिथि, समय एवं स्थान पर उत्तरदाताओं से साक्षात्कार विधि के माध्यम से सूचनाएँ एकत्रित की गईं। इस तरह प्रदत्त संग्रह का कार्य पूर्ण किया गया।

*** प्रदत्तों का विश्लेषण :-**

संग्रहित किये गये प्रदत्तों को विश्लेषणात्मक पद्धति के द्वारा विश्लेषित किया गया और समसामायिक संदर्भ में परिणाम तैयार किये गये।

*** परिणाम एवं व्याख्या :-**

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणामों को निम्नांकित सारणी में दर्शाया गया है :

सारणी संख्या – 01

उत्तरदाताओं में वृद्धावस्था आधारित समस्याओं का अवलोकन संबंधी परिणाम:

समूह	संख्या	विभिन्न समस्याओं की स्थिति							
		मधुमेह	हृदय विकृति	श्वसन समस्या	निम्न दृष्टि क्षमता	अस्थि दुर्बलता	विलीण	स्मायो जन	बहु समायोजन
कुल	150	116	92	70	73	87	101	120	67
उत्तरदाताएँ		77.33%	61.33%	46.66%	48.66%	58%	67.33%	80%	44.66%

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वृद्धों में समायोजन से संबंधित समस्या सर्वाधिक होती है क्योंकि कुल 150 उत्तरदाताओं के 120 अर्थात् 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं में समायोजन की समस्याएँ पाई गईं हैं।

समायोजन की समस्या के बाद वृद्धों में होने वाली दूसरी समस्या मधुमेह है क्योंकि कुल 150 उत्तरदाताओं में 116 अर्थात् 77.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं में मधुमेह की समस्या है।

उत्तरदाताओं में होने वाली तीसरी बड़ी समस्या विस्मरण से संबंधित समस्या है क्योंकि कुल 150 उत्तरदाताओं के 101 अर्थात् 67.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं में विस्मरण की समस्या पाई गई है।

कुल उत्तरदाताओं के 92 अर्थात् 61.33 प्रतिशत उत्तरदाताएँ वैसे थे, जो हृदय रोग की समस्या से पीड़ित थे।

अस्थि दुर्बलता की समस्या भी उत्तरदाताओं में पाई गई थी। जिसका प्रतिशत कुल 150 उत्तरदाताओं का 58 प्रतिशत था।

इसी तरह कुल उत्तरदाताओं (150) के 48.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं में निम्न दृष्टि की समस्या एवं 46.66 प्रतिशत अर्थात् 70 उत्तरदाताओं में श्वसन की समस्या पाई गई है।

कुल उत्तरदाताओं (150) का 44.66 प्रतिशत अर्थात् 67 वृद्ध उत्तरदाता वैसे पाये गये जो एक से अधिक समस्याओं (बहुसमस्या) से ग्रसित थे।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट है कि वर्तमान में वृद्ध समुदाय में सर्वाधिक समायोजन की समस्याएँ होती हैं। इस समस्या के कारण वृद्धों को अपने निवास स्थान के अलावे कहीं अन्यत्र रहने में कठिनाई होती है।

समायोजन की समस्या के बाद वृद्धों में होने वाली सर्वाधिक समस्या मधुमेह है। मधुमेह एक मनोशारीरिक समस्या होती है, जो धीरे-धीरे अन्य समस्याओं को जन्म देती है।

मधुमेह की समस्या के अलावे हृदय रोग, श्वसन विकृति, अस्थि विकृति, विस्मरण की समस्या इत्यादि होती है। वृद्धों में ये सभी समस्याएँ उनके मनोवैज्ञानिक स्तर को प्रभावित करती हैं।

हमारे समाज में अनेक वृद्ध ऐसे होते हैं जो एक से अधिक समस्याओं से ग्रसित होते हैं। बहुसमस्या में अधिकांश वृद्धों में हृदय रोग, मधुमेह, विस्मरण की समस्या, अस्थि दुर्बलता इत्यादि एक से अधिक समस्याएँ पाई जाती हैं।

परामर्श :-

इस शोध में परामर्श के रूप में कहा जा सकता है कि आज वृद्धों में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती रहती है। जिससे वृद्धों का जीवन कठिनाई भरा हो जाता है। अतः इस समस्या को लेकर राष्ट्रीय प्रतिदर्श बनाकर शोध कार्य करने की आवश्यकता है जिससे की वृद्ध समुदाय का कल्याण हो सके।

संदर्भ सूची :-

1. कौर, एस0 एवं सिंह, एम0 आर0 (2021) : वरिष्ठ नागरिकों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ : साहित्य सर्वेक्षण, तकनीकी एवं अन्वेषण आधारित शोध पत्रिका, वॉल्युम 8, इश्यु-4 517-520.
2. मिश्रा, जे0 (2007) : वरिष्ठ नागरिकों में सक्रिय रहने एवं अच्छाई का अध्ययन, सामाजिक कार्य आधारित शोध पत्रिका, वॉल्युम-68, इश्यु-4, 561- 573
3. भारती के0 (2010) : भारत में वृद्धों के लिये नई चुनौतियां, शोध एवं विकास आधारित पत्रिका, वॉल्युम-15, इश्यु 2, 13-18.
4. वैष्णव, एल0, एम0, जोशी, एस0 एच0, जोशी, ए0 पी0 एवं मधुकर, ए0 एम0 (2022) : वृद्धों के स्वास्थ्य देखभाल के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम सं संबंधित उपलब्धियों का अध्ययन, औषधि विज्ञान आधारित राष्ट्रीय पुस्तकालय, वॉल्युम-26 इश्यु-3, 183-195
5. शर्मा, ए0 एवं अग्रवाल ए0 के (2020) : भारत में कोविड-19 के प्रबंधन में प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की भूमिका का अध्ययन, स्वास्थ्य आधारित अंतराष्ट्रीय शोध पत्रिका, वॉल्युम-4, इश्यु-1, 17-23
6. गोस्वामी एस0, देशमुख, पी0 आर0, पवार, आर0 राउत, ए0 भी0 भगत, एम0 एवं महेंडले, ए0 एम0 (2017) : ग्रामीण महाराष्ट्र में वृद्ध जनसंख्या में निराशा का अध्ययन। परिवार एवं औषधि विज्ञान आधारित पत्रिका, वॉल्युम 06, इश्यु-01, 803-812